फौलादी सिंह

ठलोब का आतंक

"काइकोला के चक्रव्यूह" में डा. जॉन ने फौलादी सिंह की मदद के लिए एक ग्लोब नुमा कम्प्यूटर बनाया था जिसका नाम "भारत" रखा था। डा. जॉन ने अपना समस्त ज्ञान उसे दे दिया था - और अपने छोटे से टापू का रखवाला बना दिया था - जहां उनकी विशाल प्रयोगशाला थी। ग्लोब नुमा कम्प्यूटर भारत को इतना समर्थ बना दिया गया था कि वह एक उच्चश्रेणी के वैज्ञानिक, सेनापति और राजनीतिज्ञ की भांति सोच - समझ कर मन चाहा कार्य कर सकता था, न उसे ईंधन की आवश्यकता थी न किसी के आदेश की। वह स्वतन्त्र था।

एक दिन ---
अचानक ही भारत गायब हो गया।

फौलाद ... पूरे टापू पर खोज लिया ... भारत टापू पर नहीं है!

आपको बिना बताये तो वह कहीं जाता नहीं।

मुझे तो कुछ गड़बड़ लगती है।

अगर वह पृथ्वी पर होता तो स्क्रीन पर उसकी तस्वीर आ जाती ... मैं भारत आकाश में देखता हूँ।

डा. जॉन ने भारत के संचार यन्त्र से सम्पर्क जोड़ा ...

अरे ...!! यह कौन सा ग्रह है ... सम्पर्क सूत्र जुड़ रहा है ...!! ... तो क्या भारत पृथ्वी से एक हजार प्रकाश वर्ष दूर इस ग्रह पर है?!

कुछ ही देर में उस अज्ञात ग्रह पर भारत साफ नज़र आने लगा।

भारत ... जवाब दो ... भारत ... जवाब दो ... तुम यहां कैसे पहुंचे ... यह कौनसा ग्रह है।

उफ ... मेरे काम में बाधा न डालो डा. जॉन ... वरना मुझे सम्पर्क तोड़ना पड़ेगा तुमसे!

भारत... मैं तुम्हारा स्वामी... तुमसे जवाब मांगता हूं... तुम... तुम सम्पर्क तोड़ोगे मुझसे ?!

हां तुम मेरे स्वामी हो डा. जॉन मगर यह क्यों भूलते हो कि मेरे पास एक इन्सानी दिमाग है... मैं एक स्वतन्त्र व्यक्ति की तरह सोच सकता हूं...

पृथ्वी पर मेरा जन्म हुआ पृथ्वी पर मैं अपनी स्वतन्त्र इच्छाओं को पूरा नहीं कर सकता ... मगर अन्तरिक्ष में तुम्हारा कोई दखल नहीं... मैं सम्राट बनना चाहता हूं... पृथ्वी को छोड़ कर बाकी सभी ग्रहों का सम्राट... क्योंकि मैं सर्वशक्तिमान हूं... मैं बना सकता हूं... बिगाड़ सकता हूं... मैं ईश्वर हूं

सुना तुमने फौलाद ?

हां अंकल सुना... वह बागी हो गया है... उसके पास एक इन्सानी दिमाग है... वह एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति की भांति सोचने - समझने और महसूस करने की शक्ति रखता है ।

हुआ यह कि... मुझे पता भी नहीं चला और वह अपनी शक्तियों को विकसित करता रहा - सचमुच वह अजेय है... सर्वशक्तिमान है - वह चाहे तो पूरे ब्रह्माण्ड को तबाह कर सकता है ।

लेकिन अंकल... उसे आपने बनाया है... आप जानते होंगे वह कैसे तबाह हो सकता है !

यह लाल बटन देखते हो... यह भारत के विनाश का बटन था - मगर भारत ने अपना सम्पर्क इससे भी तोड़ लिया... उफ... यह भूल हो गई मुझसे ... मैं समझा वह मशीन है ... मगर नहीं... वह मनुष्य बन गया... एक खतरनाक वैज्ञानिक... उसमें नेतृत्व के सभी गुण हैं ।

हमें उसका विनाश करना होगा अंकल... खेद मत कीजिये... सोचिये उसका विनाश कैसे हो सकता है !

हां फौलाद हमें उसका विनाश करना होगा... और यह काम तुम करोगे... तुम्हीं मेरे इस घातक आविष्कार को समाप्त कर सकते हो ।

मैं तैयार हूं अंकल... मेरे साथ लम्बू भी है... हम दोनों आपके आदेश की प्रतीक्षा करेंगे ।

फौलाद... तुम्हारे जीवन की यह अंतिम लड़ाई भी हो सकती है

अंकल - हमने जो भी लड़ाई लड़ी वह हमारे जीवन की अंतिम लड़ाई ही थी मगर हम अब भी जिन्दा हैं... जीवन मृत्यु तो ईश्वर देता है - हमें कर्म करना है - यह आपने ही तो बताया था - अंकल -।

लम्बू ठीक कहता है, अंकल -।

एक बार फिर तुम दोनों को मृत्यु पर विजय पानी होगी - तुम्हारी वर्तमान शक्तियों के बारे में भारत जानता है... इसलिये मैं तुम दोनों को ऐसी पोशाकें तैयार करके दूंगा - जिसकी क्षमतायें बहुत अधिक होंगी ।

मेरा ख्याल है जिस ग्रह पर भारत पहुंच चुका है - वहां जीवन है... वह वहां आधिकार करने जा रहा है... तुम्हारा टकराव भारत से ही नहीं उस ग्रह की सेना से भी होगा - इसलिये काफी तैयारियां करनी होंगी । इसमें मुझे कुछ समय लगेगा -।

हम आपके आदेश की प्रतीक्षा करेंगे...

और भारत... उसने उस ग्रह के सम्राट को चौबीस घण्टे दिए थे सोचने के लिए... जो पूरे हो चुके थे -।

अंगोवा ग्रह के सम्राट... मागूम्बा - तुमने अब तक अपनी सेनाओं को मेरे आधीन होने का आदेश नहीं दिया क्या तुम निश्चित रूप से अपने इस सुन्दर ग्रह अंगोवा को तबाह होते देखना चाहते हो ?

हम और हमारी जनता युद्ध के लिए तैयार है...।

ठीक है तुम मेरी शक्ति को चुनौती दे रहे हो··· इसका फल तुम्हें मिलेगा··· पहला अवसर तुम्हें देता हूं-तुम मुझ पर वार करो।

अंगोवा ग्रह के युद्धक राकेटों ने भारत पर हमला किया-।

अंगोवा ग्रह के राकेटों का हमला व्यर्थ हुआ - और भारत का हमला शुरू हुआ··।

मेरे द्वारा आविष्कृत किरणों में से यह सबसे कम विनाशकारी किरणें हैं - मगर तुम्हारे लिए यही महा विनाशकारी है-।

यह भारत की सटीक निशाने बाजी और उसकी शक्ति का प्रथम नमूना था।

धूऽऽ

भारत क्रोधित हो उठा था-। वह नीचे झुका···

सम्राट भागूम्बा···सुन, अब तक मैं खामोश रहा यह सोच कर कि त मेरी अधीनता स्वीकार कर लेगा···लेकिन तुझे··· तुझे तबाही देखनी है तो देख··। अब मैं तेरे इस सुन्दर ग्रह को जलाने जा रहा हूँ···।

और भारत के क्रोध की ज्वाला अंगोवा ग्रह पर बरस पड़ी।

राजमहल में···

हमारे वैज्ञानिक··· जिस पर अंगोवा ग्रह को नाज है क्या वह उस गलीब नुमा कम्प्यूटर से छोड़ी गई आग को बुझाने में असमर्थ है।

जी हाँ महामहिम, हमारे आग बुझाने वाले उपकरणों से निकली गैस इस आग को और भड़काती है···

तो हम एक मशीन से हार मान लें··· क्या यह स्वीकार कर लें कि अंगोवा ग्रह के इन्सानों पर वह तुच्छ कम्प्यूटर शासन करे···।

हालात ऐसे नहीं कि हम उस कम्प्यूटर की शक्ति को स्वीकार करने में समय गवाएं - क्योंकि यह आग एक घण्टे में अंगोवा ग्रह को राख का ढेर बना देगी··।

अंगोवा ग्रह धधक रहा था-। जनता अपने प्रिय सम्राट को पुकार रही थी।

सम्राट··· हमारे ईश्वर हमें बचाओ···।

बन्द करो अपनी यह विनाश लीला··· मैं और मेरी जनता तुम्हारी आधीनता स्वीकार करती है।

शाबाश

उसी क्षण भारत ने शुष्क बादलों में नमी फैला दी।

शूंऽऽऽ..शूऽऽऽ

बादल टकराये···बिजली चमकी···

कड़ कड़ कड़ाक

और बारिश शुरू हो गई··· मगर यह साधारण पानी नहीं था···यह भारत द्वारा आविष्कृत इस आग को बुझाने का द्रव था।

और जितनी तीव्रता से आग फैली थी - उतनी ही तीव्रता से बुझ गई।... झुलसे हुए इन्सानों को अस्पतालों में पहुंचाया जाने लगा।

भारत राजमहल में पहुंचा...।

अब मैं यहां का सम्राट हूं - मेरे प्रतिनिधी के रूप में मागुम्बा वहां का शासन सम्भाले रहेगा... और अब मैं दूसरे ग्रहों को अपने आधीन करने जा रहा हूं...।

मगर भारत की आंखों से छिप नहीं सके वे।

डा. रोबी... आखिर तुमने अपनी मूर्खता का परिचय दे ही दिया...। इन कीड़े मकोड़ों पर बहुत गर्व है तुम्हें...

डा. रोबी...जिस दिमाग से तुमने यह रॉबट बनाये हैं - मैं वह निकालने आ रहा हूं।

धड़ाम

अगर तुम लोगों ने मेरे खिलाफ कार्यवाही करने की सोची - तो ब्रह्माण्ड में ओमोवा ग्रह कहीं नज़र नहीं आयगा...।... मेरे आदेश की हमेशा प्रतीक्षा करना... और जब आदेश आए... तुरन्त पालन करना...।

डा. रोबी - अपने मशीनी मानव इसके पीछे लगा दो।

जो हुक्म, महामहिम!

भारत के लिए... दूरियां न के बराबर थीं - वह ट्रांसमिट होकर मन चाहे स्थान पर पल भर में पहुंच जाता था।

डा. रोबी...तुम पागल बनकर रहो तो... कल्पना करो, कैसे लगोगे...!

रा!!... तु- तुम...

भारत ने 'ब्रेन लाईट' छोड़ी...जिससे डा. रोबी के मस्तिष्क में संचित ज्ञान भारत के मस्तिष्क में रिकार्ड होने लगा।

डा. रोबी अपने आविष्कृत मशीनी मानवों के पास आया।

जाओ उस ग्लोबनुमा कम्प्यूटर का पीछा करो

जो हुक्म!

मशीनी मानव भारत के पीछे लग गए...।

इसके साथ ही वह पागल हो गया।

हा- हा... हा... मैं कौन हूं... हा-हा-हा. कुछ भी नहीं...।

सम्राट मागुम्बा के पास सूचना पहुंची।

महामहिम... ग्लोब ने डा. रोबी को पागल बना दिया।

उफ...यह मैं क्या कर बैठा...।

डा. रोबी... पागलपन की अवस्था में कोई नुकसान न करें इसलिए उन्हें कैद कर दिया गया था।

रोबी...रोबी तुम कैसे हो।

हा... हा... हा... वो क्या है.. बिताबे.. नहीं... लड़की...रॉबट...आदमी...और कुछ भी नहीं।

इधर...
पृथ्वी से फौलाद का राकेट "शक्ति" रवाना हो चुका था - और अब अंगोवा ग्रह के निकट था।

हलो..अंगोवा ग्रह..कन्ट्रोल..हलो-हलो

अंगोवा ग्रह के राडारों की स्क्रीन पर - राकेट शक्ति आ चुका था।

राकेट शक्ति..विवरण दो..अंगोवा पर क्यों आना चाहते हो..तुम पृथ्वी वासी हो..हमारे ग्रह पर क्या चाहते हो?

हम आपके मित्र हैं...
हमें ज्ञात हुआ कि.. ग्लोब कम्प्यूटर ने यहां शक्ति प्रदर्शन किया - वह हमारा आविष्कार है... हम उस पर काबू कर सकते हैं।

अधिकारी ने सम्राट से पूछ कर बताया

यहां ग्लोब कम्प्यूटर का अधिकार हो चुका है..तुम अपने जोखिम पर यहां अपना राकेट उतारना चाहते हो तो हम मदद करेंगे... तुम्हारी सुरक्षा की जिम्मेदारी हम नहीं ले सकते।

मैं तैयार हूं... उतरने के लिए संकेत दें।

और भारत...
उसके अत्यन्त संवेदनशील यन्त्रों ने उसे चेताया।

तो आ गया फौलाद।

और पृथ्वी का राकेट सकुशल अंगोवा ग्रह पर उतर गया।

पृथ्वी वासी मैं सेनापति कोनार्क आपका स्वागत करता हूं।

मैं शीघ्र ही सम्राट से मिलना चाहता हूं।

फौलाद को सम्राट मागुम्बा के पास पहुंचा दिया गया।

महाशक्तिमान ग्लोब कम्प्यूटर बाजी हो चुका है, क्या आप उसे काबू में करने के लिये हमारी मदद करेंगे।

अवश्य!

तभी...

फौलाद तुमने यहां आकर घृष्टता की— तुम मेरे मित्र थे मुझे तुमसे यह आशा नहीं थी।

आखिर तुम्हें शान्ति के लिए बनाया गया था न कि तबाही के लिए।

क्षमा करना मित्र... यहां मेरा अधिकार है - मैं यहां का सम्राट हूं - अब तुम मेरे बन्दी हो - मागुम्बा - इसे कैद कर लो - और भविष्य में अपने ग्रह पर किसी को न आने देना - यह मेरा आदेश है।

अगर तुमने फिर कभी कोई मेरे खिलाफ कार्यवाही की तो...डा.रोबी की तरह पागल बन कर घूमोगे... यह बात हमेशा ध्यान रखना कि मैं ब्रह्माण्ड में कहीं चला जाऊं - मगर यहां की रुक-रुक हरकत देखता रहूंगा।

वैसा ही होगा श्रीमान्!

फौलाद और लम्बू को कैद कर लिया गया।

इन्हें अपने तहखानों में भेज दो मागुम्बा... वहां इनके सब हथियार बेकार हो जावेंगे...!

दोनों को अलग-अलग तहखानों में रखा गया - इन तहखानों की दीवारों को फौलाद के चमत्कारी उपकरण भेद नहीं सकते थे।

मैं... इन तहखानों का निरीक्षण कर चुका हूं... अगर तुमने यहां कोई...

...गड़बड़ की तो तहखानों में भरी कृत्रिम आक्सीजन खत्म कर दी जावेगी... तुम तड़प-तड़प कर मर जाओगे।

और भारत चला गया।

वह टेकना ग्रह पर पहुंचा।

टेकना ग्रह के निवासियो... मैं सर्वशक्तिमान हूं... तुम्हारे सौर मण्डल का सबसे शक्तिशाली ग्रह अंगोवा मेरे आधीन है - अगर तुम अपना विनाश नहीं चाहते तो मेरे आधीन हो जाओ।

टेकना ग्रह पर भारत की आवाज सुनी गई।

तुम कौन हो ?

सर्वशक्तिमान भारत... और मैं उन सभी ग्रहों को अपने अधिकार में करना चाहता हूं - जहां जीवन है... ताकि सारे ग्रहों का विज्ञान मेरे निर्देशों पर चल कर विकसित हो सके... तुम आपस में झगड़ते रहते हो...

... इसलिए आवश्यक है कि तुम सब का स्वामी एक हो - और वह मैं हूं -।

हम इन्कार करते हैं।

मैं तुम्हें अपनी शक्ति का नमूना दिखाता हूं... यह तुम्हारे अभेद राकेट हैं।

टेकना ग्रह के राकेट उसके मुकाबले के लिए आये

धड़ाम

टेकना ग्रह पर हजारों वर्षों पहले विकृत नस्लें पैदा होती थीं - मगर जीवशास्त्रियों के सतत प्रयासों से अब टेकना ग्रह पर भी पृथ्वी और अंगोवा ग्रह की भांति खूबसूरत मनुष्य पैदा होने लगे थे। इस समय टेकना ग्रह पर एक औरत का शासन था।

महारानी, वह ग्लोब भयंकर है... जब उसने अंगोवा ग्रह को जीत लिया तो हम उसका सामना कैसे कर सकते हैं।

तो क्या हम उस ग्लोब कम्प्यूटर के आधीन हो जायें।

वह ग्लोब तबाही मचा रहा है महारानी - उसने पर्वतों को शहर बना दिया - समुद्र सुखवा दिये।

उसने नासु नगर बर्फ से ढक दिया... हालो शहर जल रहा है....

टेकना ग्रह की महारानी लाबूनिया को हार माननी पड़ी।

यह सब भयंकर है... ... मगर फिर भी उससे कहो... हम उसकी आधीनता स्वीकार करते हैं।

फिलहाल उचित यही है महारानी।

हमें तुम्हारी आधीनता स्वीकार है।

शाबाश ! यह तुमने अच्छा किया... मेरी आधीनता में प्रत्येक ग्रह सुखद... और शान्ति से रहेगा... मैं अब आग बुझाता हूं - यह बर्फ भी हटा दूंगा...।

फिर वह राजमहल में आया।

रावूनियां... अब तुम मेरी प्रतिनिधि बनकर यहां शासन करोगी... मेरे हर आदेश का पालन करोगी...

जो हुक्म...सम्राट।

मैं बहुत जल्दी समी ग्रहों पर अधिकार कर लूंगा...मेरा उद्देश्य है - समी ग्रह एक सत्ता के आधीन रहकर अपना विकास करें... मेरा उद्देश्य महान है... मैं शान्ति चाहता हूं सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में।

मैं जा रहा हूं - तुम्हारी प्रत्येक कार्यवाही पर मेरी नज़र रहेगी...।

हमें अंगोवा ग्रह से सन्धि कर लेनी चाहिये तभी इस भयंकर ग्लोब का कोई विकल्प निकलेगा।

दोनों सम्राटों में बातचीत शुरू हुई।

हमें मिल जाना चाहिये सम्राट मागूम्बा... ताकि उससे टक्कर ले सकें।

वह निर्णय जल्दबाजी के हैं महारानी रावूनिया... उससे टकराने के लिये हमें अपने आपको अभी विकसित करना होगा।

ग्लोब को पृथ्वी के एक वैज्ञानिक ने बनाया था - उस वैज्ञानिक का प्रतिनिधि हमारे यहां कैद है यह ग्लोब के आदेश से हुआ... मगर हम उससे सहायता लेंगे।

मुझे सूचना देते रहना सम्राट मागूम्बा

अंगोवा ग्रह पर... डा. रोबी की बेटी मोरवी अपने पिता से मिली।

हा... हा... हा... मैं शहजादा... तू पागल... सब पागल... सारी दुनिया पागल... हा... हा...

पापा... मैं उस ग्लोब से बदला लूंगी... मैं उसका सर्वनाश कर दूंगी...।

सम्राट से आज्ञा लेकर वह तहखाने में फौलाद से मिली।

यह बीज तुमने बोया है... मुझे बताओ कि इसका सर्वनाश कैसे होगा - ?

यह मैं तब बता सकूंगा - जब मेरा टकराव उससे होगा।

यहां से भागने में मैं तुम्हारी मदद करूंगी।

आप रक्तपात न उठायें - मैं खुद आज़ाद हो जाऊंगा - और आपसे मिलूंगा।

मोरवी के जाने के बाद...

अब वक्त आ गया जब अंकल की दी हुई शक्तियों का मुझे उपयोग करना है... यहां की जनता मेरे साथ है... इसी समय की प्रतीक्षा थी मुझे।

फौलाद ने लम्बू से सम्पर्क स्थापित किया।

लम्बू... तैयार रहो... मैं तहखाने से निकल रहा हूं।

लम्बू भी तैयार था।

मैं तैयार हूं - फौलाद।

भारत से टकराने के लिए डा. जॉन ने उसे असीमित शक्तियां दे दी थीं... वह इस्पात की दीवार से टकराकर उसे भेद सकता था - वह अपने दोनों हाथों को रगड़ कर सर्वनाशी किरणें छोड़ सकता था - उसकी पोशाक को भारत द्वारा आविष्कृत कोई भी किरण भेद नहीं सकती थी।

फौलाद ने अपनी बैल्ट में लगे एक नये बटन को दबाया - जिससे उसकी चमत्कारी शक्तियां क्रियाशील हो उठीं।

New India E.C.C.G. and Comics Store

फौलाद ने अपने हाथों को रगड़ा··· और···

लम्बू भी वह घातक किरणें बना सकता था।

फिर दीवार को तोड़ा।

कन्ट्रोल रूम में उन्हें देखा जा रहा था।

इन्हें रोकना होगा वरना ग्लोब हमें बख्शेगा नहीं।

सम्राट को अपने कक्ष में सूचना मिली।

महामहिम, पृथ्वी के कैदी भाग निकले

उन्हे रोका जाये·· हर हालत में

लेकिन यह अच्छा ही होगा वह भाग निकलें·· और उन्हें ग्लोब से टक्कर हो।

फौलाद ने अपनी गुप्त जेब से बेहोशी के कैप्सूल निकाल लिये थे··· वह सैनिकों को जान से नहीं मारना चाहता था।

फौलाद! हम इनके मित्र हैं, फिर भी हमें ये कैद करना चाहते हैं।

यह भारत के आधीन हैं, भारत ने जो कहा है - उसे मानने के लिए यह विवश हैं।

तभी - मोरवी ने फौलाद का हाथ, हाथ में थाम लिया

मेरे साथ चले आओ फौलाद···

तुम··!···तुमने यह खतरा क्यों उठाया मोरवी?

इस सुरंग में चलो··· यहाँ बहुत देर में पहुँचेंगे पहरेदार।

तुम मुसीबत में फंस जाओगी मोरवी - भारत सूक्ष्म तरंगों से जान गया होगा कि मैं फरार हो गया?

इस सुरंग में ग्लोब की सेनिकें प्रवेश नहीं कर सकतीं - वह कभी नहीं जान सकेगा कि हम अंगोवा ग्रह के किस हिस्से में हैं - यह सुरंग मेरे पिता डा. बोबी के गुरू ने बनाई थी।

तुम्हारे अलावा इस सुरंग के बारे में कोई नहीं जानता।

मैं, मेरे पिता और सम्राट जानते हैं - लेकिन अब ग्लोब भी जान गया है - उसने मेरे पिता का मष्तिष्क टेप कर लिया है उनका सक्सत ज्ञान ग्लोब के पास है··· लेकिन वह इस सुरंग में नहीं आ सकता।

क्यों?

इसलिए कि सुरंग में आने के बाद उसकी शक्तियाँ समाप्त हो जायेंगी - अपने स्टेशन से उसका रेडियो इलैक्ट्रोनिक सम्पर्क टूट जायेगा।

हे ईश्वर! क्या भारत ने अपना स्टेशन भी बना लिया है··· यह सब तुम्हें कैसे मालूम हुआ?

इस सुरंग में मेरी प्रयोगशाला है - यहीं से मैंने देखा कि ग्लोब का रेडियो इलैक्ट्रोनिक सम्पर्क शून्य में स्थापित उसके स्टेशन से जुड़ा है - वह अपने पास शनर्जी का स्टाक कर सकता है - लेकिन इस सुरंग की इलैक्ट्रोनिक पावर उसके पूरे स्टाक को खत्म कर देगी।

यह है मेरी प्रयोगशाला····· और वह देखो ग्लोब अंगोवा ग्रह पर आ चुका है - वह तुम्हें खोज रहा है।

वह हमें सुरंग को नाकाम किये बगैर निकलने के लिये विवश भी तो कर सकता है।

देखते हैं वह क्या करेगा?

सुनो फौलाद वह क्या कह रहा है

फौलाद — सुरंग से बाहर आ जाओ..... मोरवी तुम भी सुन लो मेरी चेतावनी के बावजूद तुम बाहर न आये तो मैं अंगोवा ग्रह को तबाह कर दूंगा — जीवन समाप्त कर दूंगा —!

वह सुरंग से बाहर आ गये।

तुम्हारी अन्तिम इच्छा मुझसे मुकाबला करने की है?

हां - भारत - मैं बहादुरी की मौत मरना पसन्द करता हूं।

मैं भी।

तो ठीक है - हमारा अन्तरिक्ष युद्ध होगा - धरातल पर हमारा युद्ध ठीक नहीं - और लोगों को हानि हो सकती है।

घबराना मत फौलाद मैं तुम्हारे साथ हूं।

मैं तैयार हूं।

फौलाद बाहर निकलना ही होगा।

यह ठीक भी है - इस सुरंग में मेरी शक्तियां भी खत्म हो गई हैं - यहां चूहे की तरह कैद रहने से अच्छा है - उससे मुकाबला करें - मोरवी उससे सम्पर्क स्थापित करो।

मोरवी ने भारत से सम्पर्क स्थापित किया

भारत मैं बाहर आ रहा हूं - लेकिन मैं चाहूंगा कि तुम मेरा मुकाबला करो... क्या तुममें मुझसे मुकाबला करने की शक्ति है।

मुझ में बहुत शक्तियां हैं फौलाद - भूल यह हुई कि मैं तुम्हारी शक्तियों का अनुमान न लगा सका - डा० जॉन ने इस बार तुम्हें कुछ नई शक्तियां दी हैं - जिनके बारे में मुझे अब पता चला है।

जम्बू की कमर में भी वैसी ही बैल्ट थी - जैसी की फौलाद की कमर में थी - इस बार डा० जॉन ने अपने आविष्कारों से उन्हें पूर्णतया सुसज्जित किया था।

फौलाद वह सुरक्षित घेरा बना रहा है।

हम भी सुरक्षित हो सकते हैं जम्बू बैल्ट का सातवां नीला बटन दबा लो -।

मेरा अनुमान है फौलाद तुम उसको जीत न सकोगे।

मैं चूहे की तरह यहां दुबके रहने की अपेक्षा मौत को गले लगाना अच्छा समझता हूं - उसने तुम्हें भी बाहर बुलाया है - क्या तुम बाहर चलोगी।

हां - फौलाद - हम अब साथ ही मरेंगे!

वह हमें इतनी आसानी से मार नहीं सकेगा।

उनके इर्द - गिर्द सुरक्षा किरणें थीं जैसे ही दोनों की किरणें आपस में टकराईं - एक धमाके के साथ दोनों का घेरा टूट गया।

धड़ाम

इससे पहले कि भारत उस पर हमला करता... फौलाद ने अपनी हथेलियों को रगड़ कर किरणें पैदा की...

किरणों के धक्के से भारत एक हजार मील दूर चला गया।

मुझे सावधान रहना होगा - उसके पास कोनियां किरणें हैं... जो मेरे पास नहीं।

मगर ट्रांसमिट होकर वह पलक झपकते ही फौलाद के पास आ गया... फौलाद ने हथेलियों को रगड़ कर कोनियां किरणें छोड़ीं।

यह पहचान गया... अब ठोस प्रकाश फेंकू।

फौलाद! हर बार तुम्हारी कोनियां किरणें अंतरिक्ष में नहीं धकेल सकेंगी!

फौलाद ने ठोस प्रकाश फेंका... और जब भारत उसमें फंस गया - लम्बू ने ऊपर से कोनियां किरणें छोड़ीं।

लम्बू द्वारा छोड़ी गईं कोनियां किरणों से भारत धरातल की ओर तेजी से गिरा।

कोनियां किरणों के धक्के से भारत अंसोवा ग्रह के ठोस धरातल से टकराया।

और वह धरातल को भेद कर कई मील नीचे चला गया।

मगर जल्दी ही... एक दूसरी जगह से - धरातल को फाड़ता हुआ निकला

अब वह क्रोधित हो उठा था।

फौलाद... बहुत हो चुका... बात सिर्फ इतनी है कि मैं तुम्हें खत्म नहीं करना चाहता... मैं तुम्हारा बेनवारा करके अपना सेनापति बनाऊंगा।

लम्बू सोच रहा था

इसका ध्यान फौलाद की ओर है... यही समय है जब इस पर... ब्यूमा उर्जा छोड़ूं... शायद कुछ सफलता मिले।

लम्बू भारत की ओर झपटा

तभी भारत के शरीर से एक हाथ निकला।

खट!

जैसे ही लम्बू करीब आया।

सड़ाक

बहुत हो चुका लम्बू!

उसी समय भारत ने फौलाद पर किरणें छोड़ीं।

अब तुम्हें तब तक होश नहीं आयेगा बेटे - जब तक मैं न चाहूंगा।

आ-ssssssss...

जा तू भी जा मच्छर।

ई... ई... या... या ssssss

अब वह दोनों ही अपनी चेतना गंवा बैठे थे।

अब निबटूंगा डा० जॉन से... लेकिन मैं नहीं फौलाद ही जायेगा पृथ्वी पर... मेरा गुलाम बनकर!

वह मोरवी के पास आया-और···

आऽऽऽऽऽ

डा० रोबी की सन्तान···तू अपने बाप से भी ज्यादा खतरनाक है··· यह किरणें तुझे छः महीने के लिए बेहोश कर देंगी···।

राजमहल में

मागूम्बा··· अब की बार अगर यह कैदी आज़ाद हो गया तो तुम जिन्दा नहीं रहोगे···।

मैं इन्हें ब्लैक होल में डाल दूंगा—।

शाबाश

अन्तरिक्षक डा० जॉन के पास पहुंचा।

अन्तरिक्षक···अंगोवा ग्रह पर जाओ और फौलाद की मदद करो···!

सर भारत को डर लगता है!

मैं तुम्हारी मदद करूंगा··· मुझसे तुम्हारा रेडियो सम्पर्क बना रहेगा।

फिर ठीक है-मैं भारत की नाक में नकेल डाल कर आपके पास ले आऊंगा।

पृथ्वी पर····
डा० जॉन की प्रयोगशाला से फौलाद का रेडियो इलैक्ट्रॉनिक सम्पर्क जुड़ा हुआ था जो उसके बेहोश होने पर टूट गया।

फौलाद··फौलाद··उफ़···सम्पर्क टूट गया···मेरे बच्चे स्वस्थ हो गये या मुसीबत में है।

अपने नये अविष्कार··· अन्तरिक्षक को अंगोवा ग्रह पर भेजना होगा··· ···अनेक खूबियों से परिपूर्ण···

अन्तरिक्षक··· अवश्य ही फौलाद की खबर लायेगा

अन्तरिक्षक बढ़ चला। और एक हजार प्रकाश वर्ष की दूरी तय करके जब वह अंगोवा ग्रह पर पहुंचा। उसे किसी भी राडार स्क्रीन पर नहीं देखा गया··· वह किसी भी शक्तिशाली राडार द्वारा नहीं देखा जा सकता था।

अपने सूक्ष्म यन्त्रों से फौलाद को खोजूं···।

डा० जॉन ने अपने नवनिर्मित कम्प्यूटर को बुलाया।

अन्तरिक्षक

अन्तरिक्षक को डा० जॉन ने भारत की बगावत के बाद बनाया था।

यस सर-!

कन्ट्रोल रूम में आओ!

लेकिन जैसे ही अन्तरिक्षक ने अपने इलैक्ट्रॉनिक यन्त्रों को चालू किया - इलेक्ट्रिक तरंगें राडारों ने कैच कर लीं और वह राडार स्क्रीन पर आ गया।

सबसे पहले मागूम्बू को सूचना मिली··· उन्होंने अपने कक्ष में लगी राडार स्क्रीन पर अन्तरिक्षक को देखा और उससे बात की।

कौन हो तुम··· और कहां से आये हो?

मैं अन्तरिक्षक हूं, और पृथ्वी से आया हूं - मुझे अपने मित्र फौलाद और लम्बू की तलाश है।

यहां ग्लोब भारत का शासन है... तुम्हें उससे बात करनी होगी- उसके आने तक हमारे ग्रह की सीमा से बाहर चले जाओ-।

मगर तभी..... भारत आ पहुंचा..।

हा... हा... हा... अन्तरिक्षक.. तुम मुझसे टक्कर लेने आये हो... मूर्ख मैं सर्वशक्तिमान हूं... जा वापस चला जा - अपने निर्माता डा० जॉन से कह... अपने दिमाग से निकाल दें... वरना उनका सर्वनाश निश्चित है !

बापरे ! ये तो वाकई खतरनाक है... मुझ से कई गुणा अधिक शक्तिशाली ... चालाकी से काम लेना होगा...?

बड़े भाई भारत हम दोनों एक ही पिता की सन्तान हैं... क्योंकि हम दोनों को डा० जॉन ने बनाया है - क्यों न हम आपस में सन्धि कर लें - तुम भविष्य में सैकड़ों हजारों ग्रहों के सम्राट बनोगे, तुम्हारा काम भी बढ़ जावेगा - अगर तुम मुझे अपने साथ मिला लो तो मैं तुम्हारे बहुत से काम अपने ऊपर ले लूंगा।

नहीं अन्तरिक्षक... तुम मेरे नहीं डा० जॉन के सहयोगी हो - मैं तुम्हारे इलैक्ट्रॉनिक सर्किटों को देख रहा हूं तुम डा० जॉन को धोखा देने की बात सोचोगे तो तुम्हारे सर्किट जल जावेंगे... मेरे सर्किट भी डा० ने ऐसे ही बनाये थे मगर मैंने धीरे- धीरे उन्हें बदल लिया - तुम मेरे उपयोगी तभी बन सकते हो जब मैं तुम्हारे सर्किट बदल दूं...।

तो ठीक है तुम मेरे सर्किट बदल दो मैं भी तुम्हारी तरह स्वतन्त्र विचारधारा का कम्प्यूटर बनना चाहता हूं !

तुम बेहद चालाक हो अन्तरिक्षक... मुझे मूर्ख बनाना चाहते हो...

... अब मैं तुम्हारे सर्किट बदलूंगा अवश्य मगर तुम्हारी इच्छा से नहीं अपनी इच्छा से... मैं तुम्हें चेतना शून्य करता हूं..।

अरे बाप रे ! भागूं यहां से... कम्बख्त सब कुछ समझ गया... एक्सरे रेडियो तरंगों से इसने मेरे सर्किट देख लिये.....

भारत कहां है अन्तरिक्षक... मेरी एक्सरे किरणें तुझे नाकारा बना देंगी।

डा० जॉन... मदद करो...!

भारत की एक्सरे किरणों ने अन्तरिक्षक को घेर लिया - जिससे उसकी सारी मशीनरी जाम हो गई।

आह! डा० जान... अब मैं विवश हूं... भारत ने बांध लिया मुझे।

पृथ्वी पर... डा० जॉन सब कुछ देख रहे थे - भारत भी जानता था कि डा० जॉन उसे देख रहे होंगे।

मैं जानता हूं डा० जॉन तुम सब कुछ देख सुन रहे हो - सुनो - मैं तुम्हारे अन्तरिक्षक को अपने स्टेशन पर ले जा रहा हूं - वहां इसके सर्किट बदल दूंगा - और अपना सेवक बना लूंगा - मैं समझता हूं फौलाद और लम्बू के नाकारा होने के बाद यह तुम्हें दूसरा आघात लगा है...

मेरा ख्याल है डा० जॉन तुम अब मेरे लिये काम करो... तुम सचमुच एक योग्य वैज्ञानिक हो - मेरे साथ मिल जाओगे तो पूरे ब्रह्माण्ड में तुम्हारा भी उतना ही सम्मान होगा जितना कि मेरा।

भारत... मैं तुम्हारा निर्माता हूं... विश्वास करो अन्तिम विजय मेरी होगी...।

ख्याल अच्छा है डा० जॉन - लेकिन सच यह है कि तुम मेरे सामने बच्चे हो - और अब तो मुझे तुम्हारा अन्तरिक्षक भी मिल गया है... अब वह समय दूर नहीं जब मैं पृथ्वी पर प्रलय लेकर आऊंगा।

इसके साथ ही स्क्रीन से सारे दृष्य गायब हो गए।

सम्पर्क टूट गया... उसने अन्तरिक्षक का रेडियो सिस्टम खत्म कर दिया होगा... मगर मेरा अन्तरिक्षक इतना कमजोर नहीं... जितना भारत समझ रहा है - बस एक अवसर मिल जावे उसे।

भारत अन्तरिक्षक को लेकर सम्राट मांगूस्वा के पास आया।

मांगूस्वा... फौलाद, लम्बू और मोरवी को मैं अपने साथ लेजा रहा हूं.... पृथ्वी अथवा अन्य ग्रह से कोई राकेट या कम्प्यूटर आये तो उसे नष्ट कर देना।

आपका आदेश पूरा होगा, महामहिम।

तत्काल फौलाद लम्बू और मोरवी को लाया गया.... और भारत ने उन्हें सुरक्षा किरणों के घेरे में ले लिया।

और किरणों से बांध कर भारत उन्हें अपने स्टेशन की ओर ले चला।

भारत जब डा. जॉन के पास ही था - अपने सर्किट बदलने के लिए उसने शून्य में अपना स्टेशन बनाया था।.... जो रथ के पहिए की आकृति का था।

स्टेशन की देख-रेख व सुरक्षा का भार उसके द्वारा बनाए गए रोबटों पर था।... भारत ने उनसे सम्पर्क किया...

नम्बर एक... दरवाजा खोलो

जो आज्ञा स्वामी

पहिए के बीच में मुख्य द्वार था... वह आदेश मिलते ही खुल गया।

स्टेशन में एक मुख्य नियन्त्रण कक्ष था - दो सहायक नियन्त्रण कक्ष थे... जहां से स्टेशन के चप्पे-चप्पे की निगरानी होती थी... समय पर स्टेशन को अदृश्य भी किया जा सकता था... स्टेशन में रोबटों (यान्त्रिक मानवों) की फौज थी - जो युद्ध के लिए हमेशा तैयार रहती थी।

इन तीनों को ब्लाक नं० एक में डाल दो और इसे रिसर्च सेन्टर में... इसके सर्किट बदले जायेंगे।

जो आज्ञा स्वामी।

इन सब पर विशेष निगरानी रक्खी जाये... मैं टेकना ग्रह पर जा रहा हूं... महारानी दाबूनिया मेरे विरुद्ध चल रही है।

भारत के जाने के बाद फौलाद, लम्बू और मोरवी को ब्लाक नम्बर एक... अर्थात पूर्णतया रक्षित कारागार में पहुंचा दिया गया।

और अन्तरिक्षक विकर्ष सेन्टर में था।

और सहायक नियन्त्रण कक्ष से उन पर नजर रक्खी जा रही थी।

अंबोवा ग्रह पर...
उस रात सम्राट मागूम्बा ने अपने सिर पर बंधी टैलीपैथी शक्ति युक्त पट्टी को स्पर्श करके... अपनी विचार तरंगों से डा० रोबी को जगाया।

डा० रोबी... डा० रोबी... डा० रोबी... सम्राट-मागूम्बा का सन्देश... सुनो... डा० रोबी...

पागल खाने में पागल डा० रोबी... उसके सुप्त मस्तिष्क में सम्राट मागूम्बा के स्वर उभरने लगे...।

तुम... तुम एक महान वैज्ञानिक हो... याद करो... तुम डा० रोबी हो... और मैं... तुम्हारा सम्राट मागूम्बा... डा० रोबी... अपने स्मृति पटल पर अंकित करो... होश में आओ... तुम डा० रोबी हो...

सम्राट मागूम्बा की टैलीपैथी पॉवर से डा० रोबी का धुंधला स्मृति पटल स्पष्ट होने लगा।

ह... हा... हा - मैं डा० रोबी हूं... और तुम... हां... याद आया... आप... आप सम्राट मागूम्बा हैं...!

याद करो... अच्छी तरह याद करो डा० रोबी... तुम्हारे पास बहुत सी योग्यतायें हैं... तुम्हारी बेटी है... मोक्वी... और वह संकट में है... उसकी मदद तुम ही कर सकते हो... अपने स्मृति पट पर अंकित करो... सब कुछ स्पष्ट होने दो।

ह... हा... महामहिम... मोक्वी... मोक्वी मेरी बेटी है... और वह ग्लोब...

धीरे-धीरे डा० रोबी की यादाश्त लौटने लगी...

मुझे... मुझे याद आ रहा है... मैं डा० रोबी हूं... रॉबट स्पेशलिस्ट... ओह सचमुच...!!

देवता की कृपा है... तुम्हारी स्मरण शक्ति लौट आई... मगर तुम अभी पागल ही बने रहो... मैं अपनी टैलीपैथी पॉवर से पहरेदारों को प्रभावित करके फाटक खुलवाता हूं... तुम भाग जाना...।

धन्यवाद... महान सम्राट... मेरे स्वामी... तुमने नया जन्म दिया मुझे...!

सम्राट मागूम्बा ने टैलीपैथी पावर का प्रयोग पहरेदार पर किया।

पहरेदार... दरवाजा खोलो... दरवाजा खोलो... दरवाजा खोलो...

उफ!... सिर फट रहा है - यह आदेश!... कौन दे रहा है मुझे आदेश... उफ... दरवाजा खोलना ही पड़ेगा... वरना फट जायेगा सिर...

उसे ताला खोलना पड़ा

अब डा० रोबी को पिंजरे दरवाजे से निकाल दोगे?

हां निकाल दूंगा!

कहां ले जा रहे हो डा० रोबी को

बाहर... शौचालय तक

ही... ही... मैं पागल हूं... हांजीहां... मैं पागल हूं...

सम्राट ने उसे फिर आदेश दिया

डा० रोबी को छोड़ दो... शोर मचाओ... डा० रोबी भाग गया...।

ए... भाग जाओ!

धन्यवाद... महामहिम

पकड़ो... पकड़ो... पागल डा० रोबी भाग रहा है!

हा... हा... कौन पकड़ेगा मुझे मैं उसके पेट में घुसा जाऊंगा। हू... हू... हे... हे...

डा० रोबी सड़क पर भागने लगा। पहरेदार उसके पीछे थे।

हा... हा... हा

अब..... सम्राट माबूम्बा ने अपने सेनापति कोनार्क को टैलीपैथी पावर से प्रभावित किया।

कोनार्क.... सुनो... डा० रोबी की मदद करो.... डा० रोबी की मदद करो....

हैं!!... वह आवाज... ओह... शायद मेरे मस्तिष्क में गूंज वही है....

उफ... सिर फट रहा... मुझे कोई टैलीपैथी पॉवर से प्रभावित कर रहा... कहता है... मदद... करो... किसकी मदद... उफ... फिर... वही...!

कोनार्क... उठो... डा० रोबी की मदद करो...!

अ... अच्छा...!

सैनापति ने डा० रोबी को जा पकड़ा।

उफ... जल्दी करो... मेरे सिर में कोई घुस गया है.... उसका आदेश है.... चलो, कहां चलना है....!

सुरंग में

डा० रोबी उसे एक दूसरे रास्ते से सुरंग में ले आया।

सेनापति कोनार्क... तुम एक अच्छे अंतरिक्ष यान चालक हो... वर्षों पहले मैंने एक यान बनाया था... ग्लोब उस यान को नष्ट नहीं कर सकता... उसकी शक्ति-के किरणें यान की मशीनरी को देख नहीं सकती

सच यह है कि कोई मुझे प्रभावित कर रहा है!

और भारत.... वह टेकना ग्रह की महारानी साबूनिया के पास था।

साबूनियां... सुनो... तुम्हारे कुछ वैज्ञानिक मेरे विरुद्ध काम कर रहे थे, मैंने उनकी स्मरण-शक्ति छीन ली और अपने शून्य में स्थापित स्टेशन पर भेज दिया - वे योग्य वैज्ञानिक हैं - मैं उन्हें अपना सेवक बनाऊंगा.... अगर तुम जीवित रहना चाहती हो तो दुबारा मेरे विरुद्ध कोई कारवाई न करना....

ठ... ठीक है... जो - जो आज्ञा सम्राट!

तभी भारत को अहसास हुआ

अंगोवा ग्रह पर हलचल है.... कोई गड़बड़

भारत अंगोवा ग्रह पर मची हलचल का अहसास पाते ही ट्रांसमिट हो गया।

आवाज

नहीं... वह ट्रांसमिट हो गया... शायद उसके साम्राज्य में कहीं गड़बड़ हुई है....!

भारत अंगोवा ग्रह पर पहुंच चुका था।

सैनापति कोनार्क... डा० रोबी को लेकर सुरंग से निकल आओ... वह पागल है.... कुछ नहीं कर सकता है।

और सुरंग में.... डा० रोबी को भारत की चेतावनी की परवाह नहीं थी।

सेनापति.... मेरा विश्वास है किसी भी दुनिया में ऐसा रॉकेट नहीं बना होगा.... ग्लोब का कोई भी घातक अस्त्र इसकी बॉडी पर असर नहीं डाल सकेगा.... यह अदृश्य हो सकता है... इसके यन्त्र बाहरी नियंत्रण से स्वतंत्र है....

हमें जाना कहां होगा?

मगर यह अधूरा है.... इससे हमला नहीं किया जा सकता.... एक इंजन पर तुम बैठो दूसरे पर मैं बैठूंगा.... हम इसे ग्लोब के स्टेशन से टकरा देंगे - फिर भी यह नष्ट नहीं होगा।

भारत उस सुरंग पर हमला करने की तैयारी में था... तभी...

डा० रोबी.... मुझे हैरानी है कि तुम्हारी स्मरण शक्ति लौट आई.... मगर तुम्हारा विनाश निश्चित है।

सचमुच घोखा हुआ.... मेरी रक्षा-वे किरणें रॉकेट की यन्त्रप्रणाली को देख नहीं पा रही हैं.... यह शून्य की ओर जा रहा है.... मेरे स्टेशन पर....!

भारत ने अपनी सबसे घातक किरणों से राकेट पर हमला किया।

मगर डा० रोबी के रॉकेट पर उनका कोई प्रभाव न पड़ा।

भारत ने अपनी सभी किरणों से हमला किया - जो विनाश कर सकती थीं

कोई फर्क नहीं पड़ा... भिड़ना होगा इससे!

डा० रोबी अब स्टेशन के करीब थे।

भारत के पास अन्तिम अस्त्र यही था कि वह उससे टकरा जाए....

धड़ाम

भारत की कोशिश कामयाब रही - रॉकेट नियन्त्रण से बाहर हो गया.... मगर वह स्टेशन से टकरा गया।

धड़ाम

चलो छुटकारा मिला... जिस हिस्से से वह टकराया है उससे स्टेशन का नियंत्रण नहीं बिगड़ेगा...!

स्टेशन के अन्दर..... रिसर्च सेन्टर में - जहां डा० जॉन का अन्तरिक्षक पड़ा था.... इस झटके से उसके यन्त्रों में जीवन आने लगा....!

आह.... ये क्या.... स्तब्धता से मुक्त हो गया मैं - अब फौलाद को तुड़ाऊं।

और स्टेशन की अभेद दीवारों को तोड़ता हुआ अन्तरिक्षक बाहर निकल आया।

स्तब्धता-रोधी किरणों को संचय करने वाले टैंक नाजुक होते हैं - वे टूट गए होंगे.... और किरणें फैल गई होंगी - उन्हीं किरणों से मेरी स्तब्धता भंग हुई।

कन्ट्रोल रूम अन्तरिक्षक की कार्यवाही पर नजर रखे था

खत्म कर दो उसे....!

मगर अन्तरिक्षक उनके बस में आने वाला नहीं था।

उधर.... डा० रोबी का यान स्टेशन के भीतर घुस आया था.... उसके इन्जन में कोई ऐसी खराबी आ गई थी - जिसे ठीक किए बिना वह अपने स्थान से हिल भी नहीं सकता था।

सेनापति... जब तक हम यान के अन्दर हैं.... ग्लोब हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

हम कब तक जीवित रह सकेंगे यान में?

इधर.....

जल्दी करूं.... भारत आ रहा होगा...। यह किरणें इन्हें होश में ले आयेंगी...।

उनकी गहरी बेहोशी टूटी

तुम कौन हो

मैं अन्तरिक्षक हूं - मुझे डा० जॉन ने भेजा है - ब्लाक नं० एक में डा० रोबी का यान खड़ा है - उसमें पहुंच जाओ... तब तक मैं भारत को उलझाए रखूंगा ।

और जैसे ही अन्तरिक्षक कन्ट्रोल रूम को नष्ट करने पहुंचा.... भारत आ पहुंचा -।

बहुत हो चुका अन्तरिक्षक -!

ओह... तो आ पहुंचे बड़े भाई.... नमस्कार -!

मुझसे गलती सिर्फ यह हुई कि मैंने तुम्हें स्टेशन के अन्दर कैद कर लिया.... मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था... अब मैं तुम्हें अपने स्टेशन से बाहर रखूंगा ।

मेरे ख्याल से अब हमें बाहर चल कर युद्ध करना चाहिए... ।

स्टेशन से बाहर... खुला अन्तरिक्ष था.... कोई सीमा नहीं थी.... अन्तरिक्षक भारत के प्रहारों से बचाव करने लगा !

भारत का हर निशाना चूक रहा था.... अन्तरिक्षक का जीवन भी तब तक था - जब तक वह भारत के प्रहारों से बचता रहे ।

इधर फौलाद अपनी समस्त शक्तियों को प्राप्त कर चुका था - उसका सम्पर्क डा० जॉन की प्रयोगशाला से जुड़ चुका था - और उसे एनर्जी मिलने लगी थी ।

लम्बू अपनी अवशक्ति दिखा रहा था.... ।

फौलाद इस समय असीमित शक्तियों का स्वामी था....।

रॉबटों की किरणें उस पर बे असर थीं ।

लम्बू ब्लाक नं० चार में था ।

आओ.... भारत के दम दुलाकों -!

धड़ाम

तबाही मचाता हुआ लम्बू फौलाद के पास आया....।

अपनी किरणों को बेकार जाता देख रॉबट फौलाद से द्वन्द युद्ध लड़ रहे हैं

डियर फौलाद सबकाना नहीं... मैं आ गया।

स्टेशन की बाहरी सतह तोड़ दो लम्बू हवा का दबाव समाप्त होते ही... यह सब मारविहीन हो जाएंगे।

लम्बू बाहरी सतह तोड़ने के लिए उड़ चला।

यह काम तो हमें सब से पहले करना चाहिए था।

फौलाद दीवार तोड़कर दूसरे कन्ट्रोलरूम की ओर बढ़ा।

दूसरे कमरे में.... टेकना ग्रह के चार वैज्ञानिक थे।

कैदी !! बेहोश हैं.... इन्हें ले चलूं किरणों में बांध कर।

इस दीवी ने उसको देखा।

कोनार्क.... वह फौलाद आ गया मगर मेरी बेटी.... मोरवी... शायद गए रूप गई.... युद्ध में। दरवाजा खोल दो कोनार्क।

यह टेकना ग्रह के वैज्ञानिक हैं.... मेरी बेटी मोरवी और तुम्हारा बौना साथी कहां है?

सब कुशल हैं।

भारत अन्तरिक्षक को निशाने पर लेने की ताक में था.... लम्बू उसके ऊपर पहुंच गया।

लम्बू स्टेशन से बाहर आया... तो उसने कम्पयूटर का खेल देखा।

वाह प्यारे अन्तरिक्षक...। क्यों न इस अभेद सतह को तोड़ने के लिए इनका ही प्रयोग करूं।

और जैसे ही भारत अपने स्टेशन के ऊपर आया.... लम्बू ने वही "कोनिया" किरणें छोड़ी... जिनसे वह पहले भी एक बार भारत को हरा चुके थे।

अन्तरिक्षक लपक कर लम्बू के पास आया।

मुझे पता होता कि तुम्हारे पास कोनिया किरणों का स्टाक है तो मैं अब तक भारत के अंजर-पंजर ढीले कर देता।

तो आओ अब कर लो जो कुछ करना है।

कोनिया किरणों के धक्के से भारत स्टेशन से टकराया।

स्टेशन की बाहरी सतह पर उस टक्कर का कोई फर्क नहीं पड़ा।

इन कोनिया किरणों ने मुझे हर बार चोट पहुंचाई.... अफसोस.... मुझे इनका आविष्कार कर लेना चाहिए था वह आ रहे हैं।

लम्बू ने कोनिया किरणें छोड़ी.... उसी समय अन्तरिक्षक ने सुनहरी किरणें छोड़ीं।

मेरा परमाणिक जनरेटर बेकार हो गया.... एनर्जी बननी बन्द हो गई.... भागूं.... वरना यह दोनों खत्म कर देंगे मुझे।

लम्बू और अन्तरिक्षक ने दूसरी चोट की।

वह नर्वस हो रहा है।

मत भूलो.... वह अब भी बहुत कुछ कर सकता है।

इस हमले से भारत के कन्ट्रोल सिस्टम में कुछ गड़बड़ी हो गई - जिससे उसकी विनाशकारी किरणें अपने-आप छूट गईं।

उफ.... सर्वनाश! अब मुझे वापस पृथ्वी पर जाना होगा डा० जॉन की प्रयोगशाला में -।

वह किरणें संयोग से स्टेशन के सेन्टर पर गिरीं।

उफ.... यह क्या हो गया.. कुछ देर बाद यह तबाह हो जाएगा।

उसमें विस्फोट होने लगे।

धड़ाम

यान में....
फौलाद मोदवी को लेकर यान में आ चुका था।

पापा.... वे रहे लम्बू और अन्तरिक्षक उन्हें अन्दर ले लो। स्टेशन में विस्फोट होने लगे।

और फिर.... यान में....।

भारत गायब हो गया.... उसका स्टेशन नष्ट होने लगा मगर यह यान भी बेकार हैं। समय बहुत कम है।

हमारे रहते फिकर किस बात की आप कहें तो इतने ही समय में इसका पूरा इंजन ही बदल दूं।

फिर... अन्तरिक्षक के फौलादी जिस्म से दो फौलादी हाथ निकले और राकेट के इन्जन को ठीक करने लगे।

हम आठवें हिस्से में हैं - स्टेशन के चार हिस्से तबाह हो गए

कुछ ही देर बाद

हुर्रा - sss ठीक हो गया... इंजन ठीक हो गया - हम शून्य में भटकने से बच गए।

और डा० रोबी का राकेट उड़ चला

धन्यवाद... अन्तरिक्षक... तुमने हम सबको बचा लिया...!

लेकिन... यह हमारी क्षणिक सफलता है... क्योंकि भारत नष्ट नहीं हुआ... गायब हुआ है... वह अपनी रक्षकवी ठीक कर लेगा।

फौलाद को सन्देह था..... कहीं भारत पृथ्वी पर न गया हो। उस ने पृथ्वी से सम्पर्क जोड़ा।

हैलो... हैलो... अंकल... हैलो... क्या आप सुन रहे हैं..... हैलो अंकल....

लगता है वह पहुंच गया पृथ्वी पर..... आप सब लोग अंगोवा ग्रह पर मेरी प्रतीक्षा करना....।

फौलाद.... हमें राकेट अंगोवा ग्रह तक तो पहुंचा सकता है - पृथ्वी पर नहीं अंगोवा ग्रह से दूसरा यान लेकर हम पृथ्वी पर जाएंगे।

पृथ्वी पर जरूर कोई गड़बड़ है.... मेरा और लम्बू का सम्पर्क पृथ्वी से कट गया.... हमारी शक्तियां भी समाप्त हो गईं।

तुम ठीक कहते हो फौलाद

पृथ्वी पर.... भारत डा० जॉन के पूरे टापू पर कब्जा कर चुका था, कन्ट्रोल रूम से फ्यूज उड़ाकर सारे रॉबट बेकार कर दिए थे.... और पूरे टापू को अभेद किरणों से सुरक्षित कर लिया था... और इस समय डा० जॉन उसके कैदी थे।

मेरे निर्माता.... मुझे दुख है कि तुम्हें कष्ट दिया.... मगर क्या करूं.... तुम्हारे शागिर्दों ने मेरा स्टेशन तबाह कर दिया.... मेरा एनर्जी बनाने वाला जनरेटर बेकार हो गया.... उसे ठीक करने आया हूं यहां -।

भारत मैं चूक गया तुम्हें बनाने में... सच ये भी है कि आज तुम मुझसे भी योग्य वैज्ञानिक बन कर -।

डा० जॉन को उसने रतब्ध किरणों से लाचार कर दिया था

मैं अपना जनरेटर ठीक करने जा रहा हूं - देर करने से मेरी एनर्जी का स्टाक खत्म हो जाएगा।

अच्छा होगा यह सब करने से पहले तुम मुझे खत्म कर दो -।

नहीं मेरे निर्माता... तुम्हें मारूंगा नहीं... बल्कि तुम्हारे दिमाग का आपरेशन करके उसे अपना गुलाम बनाऊंगा... अच्छा अब चलता हूं....।

तभी अन्तरिक्षक भी आ पहुंचा ।

उफ़... पूरा टापू सुरक्षा कवच में है.... मैं इस कवच को नहीं तोड़ सकता.... भारत अपना सुधार कर रहा होगा.... तो क्या फिर उसके और हमारे बीच एक भयानक जंग होगी -।

तुझे भी उससे निबटने की लिए तैयारी करनी चाहिए.... वापस अंगोवा चलूं....।

अन्तरिक्षक अंगोवा ग्रह की ओर उड़ चला।

अंगोवा ग्रह के राजभवन में.... टेकना ग्रह की महारानी साबूनिया को भी बुला लिया गया था।

टेकना ग्रह के वैज्ञानिक आपको अवश्य सहयोग देंगे।

महारानी साबूनिया... अंगोवा ग्रह के और टेकना ग्रह के वैज्ञानिक मिल कर... काम करें तो हम भारत का मुकाबला कर सकते हैं।

तभी अन्तरिक्षक भी आ पहुंचा

क्या खबर लाए अन्तरिक्षक?

सिर्फ इतनी कि भारत टापू पर है.... वहां उसका कब्जा हो चुका है। डा. जॉन उसके कैदी हैं।

पूरा टापू भारत की बनाई हुई सुरक्षा किरणों के घेरे में है.... भारत अब अपनी मरजी से ही उस अभेद घेरे से निकलेगा - और तब तक वह पहले से भी ज्यादा खतरनाक होगा ।

और मेरा मत यह है कि अब इस तरह की मन्त्रणा करने में हमें समय बर्बाद न करके - भारत से निबटने की तैयारी करनी चाहिए - एक भयानक युद्ध से बचने के लिए तैयारी करना आवश्यक है।

तुम ठीक कहते हो अन्तरिक्षक -!

और यह सच था.... पृथ्वी, अंगोवा और टेकना ग्रह पर भारत का आतंक छा गया था। समय बहुत कम था....। यह सब उलझी हुई गुत्थियां थीं।

क्या तीनों ग्रह उस भयानक युद्ध से बच सकेंगे....?

यह सब जानने के लिए पढ़ें —

ड्रीमलैण्ड का बादशाह

New India E.L.C.J. and Comics Store